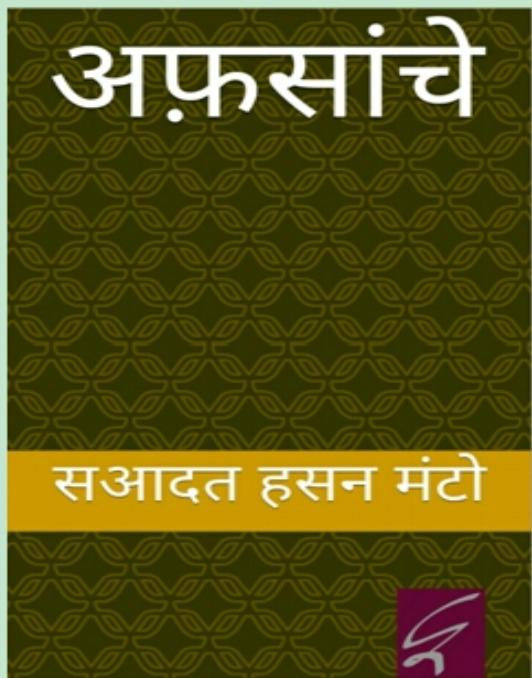


# अप्सांचे

सआदत हसन मंटी





# अफसांचे

सआदत हसन मन्टो



## ***THE AAKIL'S PUBLISHERS***

First publish in urdu  
language 1948, by saqi  
Book Depot, Delhi.

PUBLISHED BY

THE AAKIL'S  
PUBLICATION  
INDIA 2018

NEW DELHI

[DR.AS.AAKIL@GMAIL.COM](mailto:DR.AS.AAKIL@GMAIL.COM)

Copyright ©The Aakil's publisher, 2018

THIS book is a work of fiction. Names of persons, organization, businesses, characters, incidents, places and events are

fictional and a product of the imagination of the author. Any resemblance to actual events or places or persons, living or dead, is entirely coincidental. Any reference to hotels, places, businesses, locations and organizations and businesses, while real are used in a way that is purely fictional and have no resemblance to any existing organization, location etc., and any use thereof is not intended to harm, disrespect, defame or derogate any third party.

All rights reserved ®

First Imression 2018

No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

The opinions/  
contents expressed  
in this book are solely  
of the author and  
do not represent the  
opinions/ standings/  
thoughts of the  
Aakil's Publishers.

# आँखों पर चबी

“हमारी क्रौम के लोग भी कैसे हैं.....

पचास सुवर इतनी मुश्किलों के बाद तलाश करके  
इस मस्जिद में काटे हैं। वहां मंदिरों में

धड़ाधड़ गाय का गोश्त बिक रहा है।

लेकिन यहां सुवर का मास खरीदने के लिए  
कोई आता ही नहीं”।

# बे खबरी का फ़ायदा

लबलबी दबी..... पिस्तौल से झुँझला कर गोली बाहर निकली।

खिड़की में से बाहर झांकने वाला आदमी उसी जगह दोहरा होगया।

लबलबी थोड़ी देर के बाद फिर दबी..... दूसरी गोली भनभनाती हुई बाहर निकली।

सड़क पर माशकी की मशक फटी। औंधे मुँह गिरा और उस का लहू मशक के पानी में हल हो कर बहने लगा।

लबलबी तीसरी बार दबी..... निशाना चूक गया। गोली एक दीवार में ज़ज्ब होगई।

चौथी गोली एक बूढ़ी औरत की पीठ में लगी..... वो चीख भी न सकी और वहीं ढेर होगई।

पांचीं और छट्टी गोली बेकार होगई। कोई हलाक हुआ न ज़ख्मी।

गोलीयां चलाने वाला भुन्ना गया। दफ़्तर सड़क पर एक छोटा सा बच्चा दौड़ता दिखाई दिया। गोलीयां चलाने वाले ने पिस्तौल का मुँह उस तरफ़ मोड़ा।

उस के साथी ने कहा। “ये क्या करते हो”?

गोलीयां चलाने वाले ने पूछा। “क्यूँ”?

“गोलीयां तो खत्म होचुकी हैं”।

“तुम खामोश रहो..... इतने से बच्चे को क्या मालूम”?

# दावत-ए-अमल

आग लगी तो सारा मोहल्ला जल गया..... सिर्फ़ एक दुकान बच गई जिस की पेशानी पर ये बोर्ड आवेज़ां था.....

“यहां इमारत साज़ी का जुमला सामान मिलता है”।

# घाटे का सौदा

दो दोस्तों ने मिल कर दस बीस लड़कीयों में से एक

लड़की चुनी और बयालिस रूपये दे कर उसे खरीद लिया। रात गुज़ार कर एक दोस्त ने उस लड़की से पूछा। “तुम्हारा नाम क्या है”।

लड़की ने अपना नाम बताया तो वो भुन्ना गया। “हम से तो कहा गया था कि तुम दूसरे मज़हब की हो”।

लड़की ने जवाब दिया। उस ने झूट बोला था”।

ये सुन कर वह दौड़ा दौड़ा  
अपने दोस्त के पास गया  
और कहने लगा। “इस  
हरामज़ादे ने हमारे साथ  
धोका किया है..... हमारे  
ही मज़हब की लड़की थमा  
दी..... चलो वापिस कर  
आएँ”।

# हैवानियत

बड़ी मुश्किल से मियां बीवी घर का थोड़ा असासा बचाने में कामयाब हुए। जवान लड़की थी। उस का कोई पता न चला। छोटी सी बच्ची थी उस को माँ ने अपने सीने के साथ चिमटाये रख्खा। एक भूरी भैंस थी उस को बुलवाई हाँक कर ले गए। गाय बच गई मगर उस का बछड़ा न मिला।

मियां बीवी, उनकी छोटी लड़की और गाय एक जगह छुपे हुए थे। सख्त अंधेरी रात थी। बच्ची ने डर के रोना शुरू किया। खामोश फ़ज़ा में जैसे कोई ढोल पीटने लगा। माँ ने खौफ़ज़दा हो कर बच्ची के मुँह पर हाथ रख दिया। कि दुश्मन सुन न ले। आवाज़ दब गई। बाप ने एहतियातन ऊपर गाढ़े की मोटी चादर डाल दी।

थोड़ी देर के बाद दूर से किसी बिछड़े की आवाज़ आई। गाय के कान खड़े हुए। उठी और इधर उधर दीवाना वार दौड़ती डकारने लगी। उस को चुप कराने की बहुत कोशिश की गई मगर बे-सूदा।

शोर सुन कर दुश्मन आ पहुंचा। दूर से मशअलों की रौशनी दिखाई। बीवी ने अपने मियां से बड़े गुस्से के साथ कहा। “तुम क्यूँ इस हैवान को अपने साथ ले आए थे”।

# हलाल और झटका

“मैंने उस की शहरग पर छुरी रख्खी। हौले हौले फेरी और उस को हलाल कर दिया।

“ये तुम ने क्या किया”?

“क्यूँ”?

“उस को हलाल क्यूँ किया”?

‘मज़ा आता है इस तरह’

“मज़ा आता है कि बच्चे, तुझे झटका करना चाहिए था..... इस तरह”

“और हलाल करने वाले की गर्दन का झटका होगया”

# हमेशा कि छुट्टी

“पकड़ लो...पकड़ लो...देखो जाने न पाए”  
 शिकार थोड़ी सी दौड़ धूप के बाद  
 पकड़ लिया गया। जब नेज़े उस के आर पार होने  
 के लिए आगे बढ़े तो उस ने लज्जा आवाज़  
 में गिड़गिड़ा कर कहा। “मुझे न मारो.....मुझे  
 न मारो..... मैं तातीलों में अपने घर जा  
 रहा हूँ”

## इश्ति- राकियत

वो अपने घर का तमाम ज़रूरी सामान एक ट्रक में लदवा कर दूसरे शहर जा रहा था कि रास्ते में लोगों ने उसे रोक लिया। एक ने ट्रक के माल-ओ-अस्बाब पर हरीसाना नज़र डालते हुए कहा, “देखो यार किस मज़े से इतना माल अकेला उड़ाए चला जा रहा था”। अस्बाब के मालिक ने मुस्कुरा कर कहा। “जनाब ये माल मेरा अपना है”। दो तीन आदमी हँसे। “हम सब जानते हैं”। एक आदमी चिल्लाया। “लूट लो, ये अमीर आदमी है... ट्रक लेकर चोरियां करता है”।

# इस्लाह

“कौन हो तुम”?

“तुम कौन हो”

“हरहर महादेव.....हरहर महादेव”

“हरहर महादेव”

“सुबूत क्या है”?

“सुबूत.....मेरा नाम धर्मचंद है”

“ये कोई सुबूत नहीं”

“चार वेदों से कोई भी बात मुझ से पूछ लो”।

“हम वेदों को नहीं जानते.....सुबूत दो”

“क्या”?

“पाएजामा ढीला करो”

“पाएजामा ढीला हुआ तो एक शोर मच गया। मार डालो.....मार डालो”

“ठहरो ठहरो..... मैं तुम्हारा भाई हूँ.....भगवान की क़सम तुम्हारा भाई हूँ”।

“तो ये क्या सिलसिला है”?

जिस इलाके से आ रहा हूँ वो हमारे दुश्मनों का था इस लिए मजबूरन मुझे ऐसा करना पड़ा..... सिर्फ अपनी जान बचाने के लिए..... एक यही चीज़ ग़लत होगई है। बाकी बिल्कुल ठीक हूँ”।

“उड़ा दो ग़लती को”

ग़लती उड़ा दी गई.....धर्मचंद भी साथ ही उड़ गया

# इस्तिक्लाल

“मैं सिख बनने के  
लिए हरगिज़ तय्यार नहीं  
..... मेरा उस्तुरा  
वापिस कर दो मुझे”।

# जैली

सुबह छः बजे पैट्रोल पंप के पास हाथ गाड़ी में बर्फ बेचने वाले के छुरा घोंपा गया..... सात बजे तक उस की लाश लुक बिछी सड़क पर पड़ी रही और उस पर बर्फ पानी बन बन गिरती रही।

सवा सात बजे पुलिस लाश उठा कर ले गई। बर्फ और खून वहीं सड़क पर पड़े रहे।

एक टांगा पास से गुज़रा। बच्चे ने सड़क पर जीते जीते खून के जमे हुए चमकीले लोथड़े की तरफ़ देखा। उस के मुँह में पानी भर आया। अपनी माँ का बाजू खींच कर बच्चे ने ऊंगली से उस की तरफ़ इशारा किया। “देखो मम्मी जैली”!

# जायज़ इस्तेमाल

दस राउंड चली और तीन आदमीयों को ज़खमी करने के बाद पठान भी आखिर सुर्ख रोओ हो ही गया।

एक अफ़रा तफ़री मची थी। लोग एक दूसरे पर गिर रहे थे। छीना झपटी हो रही थी। मार धाड़ भी जारी थी। पठान अपनी बंदूक लिए घुसा और तक़रीबन एक घंटा कुश्ती लड़ने के बाद थर्मस बोतल पर हाथ साफ़ करने में कामयाब होगया।

पुलिस पहुंची तो सब भागे..... पठान भी।

एक गोली उस के दाहिने कान को चाटती हुई निकल गई। पठान ने उस की बिल्कुल परवाह न की और सुर्ख रंग की थर्मस बोतल को अपने हाथ में मज़बूती से थामे रख्खा। अपने दोस्तों के पास पहुंच कर उस ने सब को बड़े फ़ख्रिया

अंदाज़ में थर्मस बोतल दिखाई। एक ने मुस्कुरा कर कहा।  
“खान साहब आप ये क्या उठा लाए हैं”।

खान साहब ने पसंदीदा नज़रों से बोतल के चमकते हुए ढकने को देखा और पूछा। “क्यूँ”?

“ये तो ठंडी चीज़ें ठंडी और गर्म चीज़ें गर्म रखने वाली बोतल हैं”।

खान साहब ने बोतल अपनी जेब में रख लो। “खो ,अम इस में निस्वार डालेगा..... गर्मीयों में गर्म रहेगी। सर्दीयों में सर्द”!

# जूता

हुजूम ने रुख बदला और सर गंगाराम के बुत पर पिल पड़ा। लाठीयां बरसाई गईं, ईंटें और पत्थर फेंके गए। एक ने मुँह पर तारकोल मल दिया। दूसरे ने बहुत से पुराने जूते जमा किए और उन का हार बना कर

बुत के गले में डालने के लिए आगे बढ़ा। मगर पुलिस आगई और गोलियां चलना शुरू हुईं। जूतों का हार पहनाने वाला ज़ख्मी होगया। चुनांचे मरहम पट्टी के लिए उसे सर गंगाराम हस्पताल भेज दिया गया

## करामात

लूटा हुआ माल बरआमद करने के लिए पुलिस ने छापे मारने शुरू किए।

लोग डरके मारे लूटा हुआ माल रात के अंधेरे में बाहर फेंकने लगे। कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने अपना माल भी मौक़ा पा कर अपने से अलाहिदा कर दिया ताकि क़ानूनी गिरिफ़त से बचे रहें।

एक आदमी को बहुत दिक्कत पेश आई। उस के पास शकर की दो बोरीयां थीं जो उस ने पंसारी की दुकान से

लूटी थीं। एक तो वो जूँतूँ रात के अंधेरे में पास वाले कुवें में फेंक आया, लेकिन जब दूसरी उठा कर उस में डालने लगा तो खुद भी साथ चला गया।

शोर सुन कर लोग इकट्ठे होगए। कुवें में रस्सियां डाली गईं। दो जवान नीचे उतरे और उस आदमी को बाहर निकाल लिया... लेकिन चंद घंटों के बाद वो मर गया।

दूसरे दिन जब लोगों ने इस्तिमाल के लिए उस कुँवें में से पानी निकाला तो वो मीठा था।

उसी रात उस आदमी की क़ब्र पर दिए जल रहे थे

## कसर-ए-नफसी

चलती गाड़ी रोक ली गई। जो दूसरे मज़हब के थे उन को निकाल निकाल कर तलवारों और गोलीयों से हलाक कर दिया गया। इस से फ़ारिग़ा हो कर गाड़ी के

00:21

बाकी मुसाफिरों की हलवे, दूध और फलों से तवाज़ो की गई। गाड़ी चलने से पहले तवाज़ो करने वालों के मुंतज़िम ने मुसाफिरों को मुख्यातब करके कहा। “भाईओ और

बहनो। हमें गाड़ी की आमद की इत्तिला बहुत देर में मिली। यही वजह है कि हम जिस तरह चाहते थे उस तरह आप की खिदमत न कर सके”।

## खबरदार

“बुलवाई मालिक मकान को बड़ी मुश्किलों से घसीट कर बाहर ले आए। कपड़े झाड़ कर वो उठ खड़ा हुआ और बुलवाइयों से कहने लगा “तुम मुझे मार डालो लेकिन खबरदार जो मेरे रुपये पैसे को हाथ लगाया”।

## खाद

उस की खुदकुशी पर उस के एक दोस्त ने कहा। “बहुत ही बे-वकूफ़ था जी। मैंने लाख समझाया कि देखो

अगर तुम्हारे केस काट दिए हैं और तुम्हारी दाढ़ी मूँड दी है तो इस का ये मतलब नहीं कि तुम्हारा धर्म ख़त्म होगया है

.....रोज़ दही इस्तिमाल करो। वाहगोरो जी ने चाहा तो एक

ही बरस में तुम फिर वैसे के वैसे हो जाओगे”

# मज़दूरी

लूट खसूट का बाज़ार गर्म था। इस गर्मी में इज़ाफ़ा होगया। जब चारों तरफ़ आग भड़कने लगी।

एक आदमी हारमोनियम की पेटी उठाए खुश खुश गाता जा रहा था..... जब तुम ही गए परदेस लगा कर ठेस ओ पीतम प्यारा, दुनिया में कौन हमारा।

एक छोटी उम्र का लड़का झोली में पापडों का अंबार डाले भागा जा रहा था..... ठोकर लगी तो पापडों की एक गङ्गी उस की

झोली में से गिर पड़ी। लड़का उसे उठाने के लिए झुका तो एक आदमी जिस ने सर पर सिलाई की मशीन उठाए हुए था उस से कहा। “रहने दे बेटा रहने दे। अपने आप भुन जाएंगे”।

बाज़ार में ढब से एक भरी हुई बोरी गिरी। एक शख्स ने जल्दी से बढ़ कर अपने चेहरे से उस का पेट चाक किया..... आंतों के बजाय शुकर, सफेद सफेद दानों वाली शुकर उबल कर बाहर निकल आई। लोग जमा होगए और अपनी झोलियां भरने लगे। एक आदमी कुर्ते के बगैर था। उस ने जल्दी से अपना तहबंद खोला और मुट्ठियाँ भर भर उस में डालने लगा।

“हट जाओ..... हट जाओ..... एक ताँगा ताज़ा ताज़ा रोगान शुदा अलमारियों से लदा हुआ गुजर गया।

ऊंचे मकान की खिड़की में से मलमल का थान फड़फड़ाता हुआ बाहर निकला..... शोले की ज़बान ने हौले से उसे चाटा..... सड़क तक पहुंचा तो राख का ढेर था।

“पूं पूं..... पूं पूं.....” मोटर के हॉर्न की आवाज़ के साथ दो औरतों की चीखें भी थीं।

लोहे का एक सैफ़ दस पंद्रह आदमीयों ने खींच कर बाहर निकाला और लाठियों की मदद से उस को खोलना शुरू किया।

“काओ ऐंड गेट”। दूध के कई टीन दोनों हाथ पर उठाए अपनी ठोड़ी से उन को सहारा दिए एक आदमी दुकान से बाहर निकला और आहिस्ता आहिस्ता बाज़ार में चलने लगा।

बुलंद आवाज़ आई। “आओ आओ लीमोनीड की बोतलें पियो..... गर्मी का मौसम है”। गले में मोटर का टावर डाले हुए आदमी ने दो बोतलें लीं और शुक्रिया अदा किए बगैर चल

दिया।

एक आवाज़ आई। “कोई आग बुझाने वालों को तो इत्तिला दे दे ..... सारा माल जल जाएगा”। किसी ने इस मुफ़्रीद मश्वरे की तरफ़ तवज्जो न दी।

लूट खसूट का बाज़ार इसी तरह गर्म रहा और इस गर्मी में चारों तरफ़ भड़कने वाली आग बदस्तूर इज़ाफ़ा करती रही। बहुत देर के बाद तड़तड़ की आवाज़ आई। गोलीयां चलने लगीं।

पुलिस को बाज़ार खाली नज़र आया... लेकिन दूर, धुएँ में मलफूफ मोटर के पास एक आदमी का साया दिखाई दिया। पुलिस के सिपाही सीटियां बजाते उस की तरफ़ लपके... साया तेज़ी से धुएँ के अंदर धुस गया। पुलिस के सिपाही भी उस के तआकुब में गए।

धुएँ का इलाक़ा खत्म हुआ तो पुलिस के सिपाहीयों ने देखा कि एक कश्मीरी मज़दूर पीठ पर वज़नी बोरी उठाए भागा चला जा रहा है।

सीटियों के गले खुशक होगए मगर वो कश्मीरी मज़दूर न रुका। उस की पीठ पर वज़न था। मामूली वज़न नहीं। एक भरी हुई बोरी थी लेकिन वो यूं दौड़ रहा था जैसे पीठ पर कुछ है ही नहीं। सिपाही हांफने लगे। एक ने तंग आ कर पिस्तौल निकाला और दाग दिया। गोली कश्मीरी मज़दूर की पिंडली में लगी। बोरी उस की पीठ पर से गिर पड़ी। घबरा कर उस ने अपने पीछे आहिस्ता आहिस्ता भागते हुए सिपाहीयों को देखा। पिंडली से बहते हुए खून की तरफ़ भी उस ने गौर किया। लेकिन एक ही झटके से बोरी उठाई और पीठ पर डाल कर फिर भागने लगा।

सिपाहीयों ने सोचा “जाने दो जहन्म में जाए”।

एक दम लंगड़ाता कश्मीरी मज़दूर लड़खड़ाया और गिर पड़ा।  
बोरी उस के ऊपर आ रही।

सिपाहीयों ने उसे पकड़ लिया और बोरी समेत ले गए।

रास्ते में कश्मीरी मज़दूर ने बारहा कहा। “हज़रत, आप मुझे क्यूँ  
पकड़ती है..... मैं तो गरीब आदमी होती..... चावल की एक  
बोरी लेती.... घर में खाती..... आप नाहक मुझे गोली मारती।  
लेकिन उस की एक न सुनी गई”।

थाने में भी कश्मीरी मज़दूर ने अपनी सफ़ाई में बहुत कुछ कहा।  
हज़रत, दूसरा लोग बड़ा बड़ा माल उठाती..... मैं तो फ़क़त  
एक चावल की बोरी लेती..... हज़रत, मैं तो गरीब होती।  
हररोज़ भात खाती।

जब वो थक हार गया तो उस ने अपनी मैली टोपी से माथे  
का पसीना पोंछा और चावलों की बोरी की तरफ़ हसरत भरी  
निगाहों से देख कर थानेदार के आगे हाथ फैला कर कहा।  
“अच्छा हज़रत, तुम बोरी अपने पास रख..... मैं अपनी मज़दूरी  
मांगती..... चार आने”!

# मुनासिब कारवाई

जब हमला हुआ तो मोहल्ले में से अक़लियत के कुछ आदमी तो क़त्ल होगए। जो बाक़ी थे जानें बचा कर भाग निकले। एक आदमी और उस की बीवी अलबत्ता अपने घर के तहखाने में छुप गए।

दो दिन और दो रातें पनाह-याफ़ता मियां बीवी ने क़तिलों की मुतवक्कलों आमद में गुज़ार दीं मगर कोई न आया।

दो दिन और गुज़र गए। मौत का डर कम होने

लगा। भूक और प्यास ने ज्यादा सताना शुरू किया।

चार दिन और बीत गए। मियां बीवी को ज़िंदगी और मौत से कोई दिलचस्पी न रही..... दोनों जा-ए-पनाह से बाहर निकल आए।

खाविंद ने बड़ी नहींफ आवाज़ में लोगों को अपनी तरफ मुतवज्जो किया और कहा। “हम दोनों अपना आप तुम्हारे हवाले करते हैं..... हमें मार डालो”।

जिन को मुतवज्जो किया गया था वो सोच में पड़ गए। “हमारे धर्म में तो जी हत्या पाप है”।

वो सब जैनी थे लेकिन उन्हों ने आपस में मश्वरा किया और मियां बीवी को मुनासिब कार्रवाई के लिए दूसरे मोहल्ले के आदमीयों के सपुर्द कर दिया

# निगरानी में

अपने दोस्त विनय को अपना हम-मज़हब ज़ाहिर करके उसे महफूज़ मङ्काम पर पहुंचाने के लिए मिल्ट्री के एक दस्ते के साथ रवाना हुआ। रास्ते में विनय जिस का मज़हब मस्लिहतन बदल दिया गया था। मिल्ट्री वालों से पूछा। “क्यूँ जनाब आस पास कोई वारदात तो नहीं हुई”?

जवाब मिला। “कोई ख़ास नहीं..... फ़लां मोहल्ले में अलबत्ता एक कुत्ता मारा गया”। सहम कर विनय पूछा। “कोई और ख़बर” जवाब मिला। “ख़ास नहीं..... नहर में तीन कुत्तियों की लाशें मिलीं”।

उस ने विनय की ख़ातिर मिल्ट्री वालों से कहा। “मिल्ट्री कुछ इंतिज़ाम नहीं करती”। जवाब मिला। “क्यूँ नहीं..... सब काम उसी

00:21

की निगरानी में होता है”।

# पठानिस्तान

“खू एक दम जल्दी बोलो, तुम कौन ऐ”?

“मैं.....मैं.....”

“खू शैतान का बच्चा जल्दी बोलो.....इंदू ऐ  
या मुस्लिमीन”

“मुस्लिमीन”

“खू तुम्हारा रसूल कौन है”?

“मोहम्मद खान”

“टीक ऐ.....जाओ”

# पेश बंदी

पहली वारदात नाके के होटल के पास हुई। फौरन ही वहां एक सिपाही का पहरा लगा दिया गया।

दूसरी वारदात दूसरे ही रोज़ शाम को स्टोर के सामने हुई। सिपाही को पहली जगह से हटा कर दूसरी वारदात के मङ्काम पर मुतअ्यन कर दिया गया।

तीसरा केस रात के बारह बजे लांड्री के पास हुआ। जब इन्सपेक्टर ने सिपाही को इस नई

जगह पहरा देने का हुक्म दिया तो उस ने  
कुछ गौर करने के बाद कहा। “मुझे वहां खड़ा  
कीजीए जहां नई वारदात होने वाली है”।

## फ्रिस्मत

“कुछ नहीं दोस्त  
.....इतनी मेहनत  
करने पर सिर्फ एक  
बक्स हाथ लगा था पर  
इस में भी साला  
सर का गोश्त निकला”

## रिआयत

“मेरी आँखों के सामने मेरी जवान बेटी  
को न मारो”।

“चलो उसी की मान लो.....कपड़े उतार कर  
हाँक

दो एक तरफ़”।

## सदके उसके

मुजरा खत्म हुआ। तमाशाई रुख्सत होगए। तो  
उस्तादी जी ने कहा। “सब कुछ लुटा पुटा कर यहां  
आए थे लेकिन अल्लाह मियां ने चंद दिनों  
में ही वारे न्यारे कर दिए”।

## सफ़ाई पसंदी

गाड़ी रुकी हुई थी।

तीन बंदूकची एक डिब्बे के पास आए। खिड़कियों में से  
अंदर झाँक कर उन्हों ने मुसाफ़िरों से क्या पूछा। “क्यूँ  
जनाब कोई मुर्गा है”।

एक मुसाफ़िर कुछ कहते कहते रुक गया। बाक़ीयों ने

00:21

जवाब दिया। “जी नहीं”।

थोड़ी देर के बाद चार नेज़ा बर्दार आए। खिड़कियों में से अंदर झाँक कर उन्होंने मुसाफिरों से पूछा। “क्यूँ जनाब कोई मुर्गा मुर्ग है”।

इस मुसाफिर ने जो पहले कुछ कहते कहते रुक गया था जवाब दिया।

“जी मालूम नहीं..... आप अंदरर आ के संडास में देख लीजीए”।

नेज़ा बर्दार अंदर दाखिल हुए। संडास तोड़ा गया तो उस में से एक मुर्गा निकल आया।

एक नेज़ा बर्दार ने कहा। “कर दो हलाल”।

दूसरे ने कहा। “नहीं यहां नहीं। डिब्बा ख़राब हो जाएगा.....बाहर ले चलो”।

# सॉरी

छुरी पेट चाक करती  
हुई नाफ़ के नीचे  
तक चली गई। इज्जार-बंद  
कट गया। छुरी मारने  
वाले के मुँह से दफ़्ऊतन  
कलमा-ए-तअस्सुफ़ निकला।  
“चे चे चे चे... मिस्टेक हो गया”।

## तक्सीम

एक आदमी ने अपने लिए लकड़ी का एक बड़ा संदूक  
मुंतखब किया जब उसे उठाने लगा तो वो अपनी जगह से

एक इंच भी न हिला।

एक शख्स ने जिसे शायद अपने मतलब की कोई चीज़ मिल ही नहीं रही थी संदूक उठाने की कोशिश करने वाले से कहा। “मैं तुम्हारी मदद करूं”?

संदूक उठाने की कोशिश करने वाला इमदाद लेने पर राजी होगया। उस शख्स ने जिसे अपने मतलब की कोई चीज़ मिल नहीं रही थी। अपने मज़बूत हाथों से संदूक को जुंबिश दी और उठा कर अपनी पीठ पर धर लिया.....  
दूसरे ने सहारा दिया..... दोनों बाहर निकले।

संदूक बहुत बोझल था। उस के वज़न के नीचे उठाने वाले की पीठ चट्ठ रही थी। टांगे दोहरी होती जा रही थीं मगर इनाम की तवक्क़ो ने इस जिस्मानी मशक्क़त का एहसास नीम मुर्दा कर दिया था।

संदूक उठाने वाले के मुक़ाबले में संदूक को मुंतख़ब करने वाला बहुत ही कमज़ोर था। सारा रस्ता वो सिर्फ़ एक हाथ से सहारा दे कर अपना हङ्क़ क्रायम रखता रहा। जब दोनों महफूज़ म़काम पर पहुंच गए तो संदूक को एक तरफ़ रख कर सारी मशक्क़त बर्दाश्त करने वाले ने कहा। “बोलो। इस संदूक के माल में से मुझे कितना मिलेगा”।

संदूक पर पहली नज़र डालने वाले ने जवाब दिया। “एक चौथाई”।

“बहुत कम है”।

00:21

“कम बिल्कुल नहीं ज्यादा है..... इस लिए कि सब से पहले मैंने ही इस पर हाथ डाला था”।

“ठीक है, लेकिन यहां तक इस कमर तोड़ बोझ को उठा के लाया कौन है”?

“आधे आधे पर राज़ी होते हो”?

“ठीक है.....खोलो संदूक”।

संदूक खोला गया तो इस में से एक आदमी बाहर निकला। हाथ में तलवार थी। बाहर निकलते ही उस ने दोनों हिस्सा दारों को चार हिस्सों में तक़सीम कर दिया।

## ताउन

चालीस पचास लट्ठु बंद आदमीयों का एक गिरोह लूट मार के लिए एक मकान की तरफ बढ़ रहा था।

दफ़्अतन उस भीड़ को चौर कर एक दुबला पतला

अधेड़ उम्र का आदमी बाहर निकला। पलट कर उस ने बुलवाइयों को लीडराना अंदाज़ में मुख्यातब किया। “भाईओ, इस मकान में बे-अंदाज़ा दौलत है। बे-शुमार कीमती सामान है। आओ हम सब मिल कर इस पर क्राबिज़ हो जाएं और माल-ए-गनीमत आपस में बांट लें”। हवा में कई लाठियां लहराईं। कई मुक्के भिंचे और बुलंद बाँग नारों का एक फ़व्वारा सा छूट पड़ा।

चालीस पचास लड़ु बंद आदमीयों का गिरोह दुबले पतले अधेड़ उम्र के आदमी की क्रियादत में उस मकान की तरफ तेज़ी से बढ़ने लगा। जिस में बे-अंदाज़ा दौलत और बे-शुमार कीमती सामान था।

मकान के सदर दरवाजे के पास रुक कर दुबला पतला आदमी फिर बुलवाइयों से मुख्यातब हुआ। “भाईओ, इस मकान में जितना माल भी है। सब तुम्हारा है, लेकिन देखो छीना झपटी नहीं करना... आपस में नहीं लड़ना.....आओ”।

एक चिल्लाया। “दरवाजे में ताला है”।

दूसरे ने बा-आवाज़-ए-बुलंद कहा। “तोड़ दो”।

“तोड़ दो.....तोड़ दो”।

हवा में कई लाठियां लहराईं, कई मुक्के भिंचे और बुलंद बाँग नारों का एक फ़व्वारा सा छूट पड़ा।

दुबले पतले आदमी ने हाथ के इशारे से दरवाज़ा

तोड़ने वालों को रोका और मुस्कुरा कर कहा। “भाईओ ठहरो..... मैं इसे चाबी से खोलता हूँ”।

ये कह कर उस ने जेब से चाबियों का गुच्छा निकाला और एक चाबी मुंतखब करके ताले में डाली और उसे खोल दिया। शीशम का भारी भर कम दरवाज़ा एक चीख के साथ वा हुआ तो हुजूम दीवाना वार अंदर दाखिल होने के लिए आगे बढ़ा। दुबले पतले आदमी ने माथे का पसीना अपनी आसतीन से पोंछते हुए कहा। “भाई, आराम आराम से, जो कुछ इस मकान में है सब तुम्हारा है फिर इस अफ़रा तफ़री की क्या ज़रूरत है”?

फौरन ही हुजूम में ज़ब्त पैदा होगया। एक एक करके बुलवाई मकान के अंदर दाखिल होने लगे लेकिन जूँही चीज़ों की लूट शुरू हुई फिर धांदली मच गई। बड़ी बे-रहमी से बुलवाई कीमती चीज़ों पर हाथ साफ़ करने लगे। दुबले पतले आदमी ने जब ये मंज़र देखा तो बड़ी दुख भरी आवाज में लुटेरों से कहा। “भाईओ, आहिस्ता आहिस्ता..... आपस में लड़ने झगड़ने की कोई ज़रूरत नहीं। नोच खसूट की भी कोई ज़रूरत नहीं। तआवुन से काम लो। अगर किसी के हाथ ज्यादा कीमती चीज़ आगई है तो हासिद मत बनो। इतना बड़ा मकान है, अपने लिए कोई और चीज़ ढूँढ लो। मगर ऐसा करते हुए वहशी न बनो..... मारधाड़ करोगे तो चीज़ें टूट जाएंगी। इस में

नुक्सान तुम्हारा ही है”।

लुटेरों में एक बार फिर नज़्म पैदा होगया। भरा हुआ मकान आहिस्ता आहिस्ता खाली होने लगा।

दुबला पतला आदमी वक्तन फ़वक्तन हिदायत देता रहा। “देखो भय्या ये रेडियो है..... आराम से उठाओ, ऐसा न हो टूट जाए..... ये इस के तार भी साथ लेते जाओ”।

“तह करलो भाई..... इसे तह करलो। अखरोट की लकड़ी की तिपाई है..... हाथ दाँत की पची कारी है। बड़ी नाजुक चीज़ है... हाँ अब ठीक है”!

“नहीं नहीं..... यहां मत पियो। बहक जाओगे..... इसे घर ले जाओ”।

“ठहरो ठहरो, मुझे मेन स्विच बंद कर लेने दो, ऐसा न हो करंट का धक्का लग जाए”।

इतने में एक कोने से शोर बुलंद हुआ। चार बुलवाई रेशमी कपड़े के एक थान पर छीना झापटी कर रहे थे। दुबला पतला आदमी तेज़ी से उन की तरफ बढ़ा और मलामत भरे लहजे में उन से कहा। “तुम कितने बे-समझ हो। चिन्दी चिन्दी हो जाएगी ऐसे क्रीम्ती कपड़े की। घर में सब चीज़ें मौजूद हैं। गज़ भी होगा। तलाश करो और माप कर कपड़ा आपस में तक़सीम करलो”।

दफ़्अतन कुत्ते के भूंकने की आवाज़ आई। अफ़ अफ़, अफ़ और चश्म ज़ोन में एक बहुत बड़ा गद्दी कुत्ता एक जस्त

के साथ अन्दर लपका और लपकते ही उस ने दो तीन लुटेरों को भंभोड़ दिया। दुबला पतला आदमी चिल्लाया। “टाइगर। टाइगर”!

टाइगर जिस के खौफ़ नाक मुँह में एक लुटेरे का नुचा हुआ गिरेबान था। दुम हिलाता हुआ दुबले पतले आदमी की तरफ़ निगाहें नीची किए क़दम उठाने लगा।

कुत्ते के आते ही सब लुटेरे भाग गए थे। सिर्फ़ एक बाक़ी रह गया था जिस के गिरेबान का टुकड़ा टाइगर के मुँह में था। उस ने दुबले पतले आदमी की तरफ़ देखा और पूछा। “कौन हो तुम”?

दुबला पतला आदमी मुस्कुराया। “इस घर का मालिक.....देखो देखो..... तुम्हारे हाथ से कांच का मर्तबान गिर रहा है”।

## उलहना

“देखो यार। तुम ने ब्लैक मार्केट  
के दाम भी लिए और ऐसा रद्दी  
पेट्रोल दिया कि एक दुकान भी न जली”।